साप्ताहिक
Live not just breaTHE

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/16-18

# दि कार्मिक पोस्ट

वर्ष : 7, अंक : 23 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 25 जनवरी 2022 से 1 फरवरी 2022 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

## गणतंत्र पर विशेष

# मध्य प्रदेश के विकास की तस्वीर

**इंदौर इंदौर जिले में 26 जनवरी को उत्साह और उमंग के साथ राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस मनाया गया। शहर के नेहरू स्टेडियम में गणतंत्र दिवस का मुख्य समारोह रखा गया। इसमें मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने ध्वजारोहण किया। उन्होंने परेड की सलामी भी ली। इस अवसर पर विभिन्न शासकीय विभागों द्वारा नयनाभिराम झांकियां भी निकाली गई। झांकियों में प्रदेश के विकास की तस्वीर नजर आई। समारोह में मुख्यमंत्री चौहान ने गणतंत्र दिवस संदेश का वाचन किया।**

गणतंत्र दिवस समारोह के दौरान अभूतपूर्व उत्साह का माहौल था। समारोह में 10 प्लाटूनों ने गार्मजोशी से आकर्षक परेड प्रस्तुत की। मुख्यमंत्री ने ध्वजारोहण के बाद खुली जीप से परेड का निरीक्षण किया। परेड के बाद उन्होंने परेड कमांडरों से परिचय भी प्राप्त किया। इस दौरान उनके साथ कलेक्टर मनीष सिंह और पुलिस आयुक्त हरिनारायणचारी मिश्र भी थे। परेड के दौरान सशस्त्र दलों ने हर्ष फायर किए।गणतंत्र दिवस अमर रहे के नारे से आसमान गुंजायमान हो गया। समारोह में 10 दलों ने आकर्षक परेड प्रस्तुत की। परेड का नेतृत्व यातायात पुलिस के एसीपी अजीत सिंह चौहान ने किया। उनका अनुकरण एआईसी सुबेदार बृजराज अजनार कर रहे थे। परेड में आरएपीटीसी, फर्स्ट बटालियन, पंद्रहवी बाहिनी, जिला पुलिस बल (पुरुष), जिला पुलिस बल (महिला), पीटीसी इंदौर, होमगार्ड, फायर ब्रिगेड तथा यातायात पुलिस आदि प्लाटून के दल शामिल हुए। बीएसएफ तथा प्रथम बाहिनी के बैंड ने देशभक्ति की धुन से पूरे वातावरण को देश भक्ति के जोश से ओतप्रोत कर दिया। समारोह के दौरान विभिन्न शासकीय विभागों द्वारा राज्य शासन की योजनाओं और कार्यक्रमों पर आधारित नयनाभिराम झांकियां निकाली गई। नगर निगम द्वारा स्वच्छता के क्षेत्र में किए गए नवाचार, आवासीय योजनाओं आदि पर झांकी निकाली गई। जिला पंचायत द्वारा जल संरक्षण के क्षेत्र में किए गए कार्यों, मध्य प्रदेश औद्योगिक विकास निगम द्वारा आत्म निर्भर भारत एवं आत्म निर्भर मध्यप्रदेश तथा औद्योगिक विकास पर झांकी निकाली गई। इंदौर विकास प्राधिकरण द्वारा इंदौर के शहीदों के जीवन, कृषि विभाग द्वारा प्राकृतिक एवं जैविक खेती, उद्यानिकी विभाग द्वारा एक जिला एक उत्पाद, शिक्षा विभाग द्वारा हमारा घर हमारा विद्यालय, संस्कृति विभाग द्वारा हेमू कालानी सहित अन्य शहीदों पर आधारित झांकियां निकाली गई। आदिम जाति कल्याण विभाग द्वारा विभागीय योजनाओं, स्वास्थ्य विभाग द्वारा इंदौर में बनाए गए देश के दूसरे सबसे बड़े कोविड केयर सेंटर, जेल विभाग द्वारा जेल के सुधार, वन विभाग द्वारा इको पर्यटन, उद्योग विभाग द्वारा रोजगार मूलक योजनाओं, महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा मुख्यमंत्री कोविड-19 बाल सेवा योजना एवं निजी स्पांसरशिप तथा यातायात विभाग द्वारा यातायात सुधार के लिए किए जा रहे कार्यों पर आधारित झांकियां शामिल रही।

## 73 वें गणतंत्र दिवस की झलकियां

देश आज अपना 73वां गणतंत्र दिवस मना रहा है। कार्यक्रम की शुरुआत में पीएम नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रीय युद्ध स्मारक पर जाकर देश की आजादी से अब तक शहीद हुए सैनिकों को श्रद्धांजलि दी। इस दौरान उन्होंने दो मिनट का मौन भी रखा। पीएम नरेंद्र मोदी इस दौरान उत्तराखंड की टोपी में दिखे। इस टोपी पर उत्तराखंड का राज्य पुष्प ब्रह्मकमल भी अंकित था। राजपथ पर देश ने लड़कियों की ताकत देखी। रिपब्लिक डे की परेड में निकली वायु सेना की झांकी में देश की पहली महिला राफेल लड़ाकू विमान पायलट शिवांगी सिंह ने भी भाग लिया। वह वायु सेना की झांकी का हिस्सा बनने वाली दूसरी महिला लड़ाकू विमान पायलट हैं। सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) की सीमा भवानी मोटरसाइकिल टीम ने गणतंत्र दिवस परेड में समां बांध दिया। यह प्रदर्शन संयम, वीरता और देश प्रेम के जज्बे से ओतप्रोत था। गणतंत्र दिवस के दौरान अरुणाचल प्रदेश, कर्नाटक, जम्मू-कश्मीर सहित गोवा की आकर्षक झांकियां दिखाई गई। गोवा की झांकी गोआ विरासत के प्रतीक विषय पर आधारित थी। झांकी में पणजी और डोना पाउला के आजाद मैदान में चेर्ट अगुआड़ा, शहीदों के स्मारक को प्रदर्शित करती दिखाई गई। पुलिस के एसआई बाबू राम को मरणोपरांत अशोक चक्र से सम्मानित किया गया। श्रीनगर में आतंकियों के खिलाफ ऑपरेशन में बाबू राम शहीद हो गए थे। उनकी पत्नी रीता रानी और बेटे मणिक ने राष्ट्रपति कोविंद से यह पुरस्कार प्राप्त किया।

साभार

# गर्म होती जलवायु के कारण पूर्वी एशिया में नदियां बढ़ा रही हैं बारिश की चरम घटनाएं

**मुंबई। ग्लोबल वार्मिंग का मतलब केवल गर्मी बढ़ने से नहीं है, बल्कि इसके कई और नुकसान भी हैं। त्सुकुबा विश्वविद्यालय की अगुवाई में शोधकर्ताओं की टीम ने पूर्वी एशिया में वायुमंडलीय नदियां नामक मौसम संबंधी घटना के कारण अधिक लगातार और गंभीर चरम वर्षा की घटनाओं का अनुमान लगाया है।**

जैसा कि नाम से पता चलता है, वायुमंडलीय नदियां वायुमंडल से बहने वाली केंद्रित जल वाष्प की लंबी, संकरी धारियां हैं। जब इनमें से कोई एक मुड़ी हुई पर्वत श्रृंखला जैसे अवरोध से टकराता है, तो यह अत्यधिक वर्षा या बर्फबारी पैदा कर सकता है। पिछले दशक में पूर्वी एशिया के कुछ हिस्सों में अक्सर इस तरह की चरम घटनाओं ने नुकसान पहुंचाया है। यह समझना जरूरी है कि भविष्य में इस तरह की घटनाओं के किस तरह विकसित होने के आसार हैं, क्योंकि जलवायु में परिवर्तन जारी है। प्रोफेसर योइची ने बताया कि गर्म होती जलवायु के तहत पूर्वी एशिया में वायुमंडलीय नदियों और अत्यधिक वर्षा के व्यवहार का पता लगाया है। इसके लिए, उन्होंने उच्च-रिजॉल्यूशन वैश्विक वायुमंडलीय परिसंचरण मॉडल सिमुलेशन के साथ-साथ क्षेत्रीय जलवायु मॉडल डाउनस्केलिंग सिमुलेशन का उपयोग किया। उन्होंने कहा हमने 1951 से 2010 तक के ऐतिहासिक मौसम संबंधी आंकड़ों की तुलना भविष्य के सिमुलेशन के साथ किया। सिमुलेशन 2090 के मुताबिक जलवायु परिदृश्य के तहत की जबकि सतह की हवा के औसतन तापमान को 4 डिग्री सेल्सियस माना गया। शोधकर्ताओं ने भविष्य के सिमुलेशन के आधार पर पूर्वानुमान लगाया जिससे पता चलता है कि जल वाष्प और वर्षा में लगातार वृद्धि होने के आसार हैं। आने वाले समय में पूर्वी एशिया के कुछ हिस्सों में अभूतपूर्व वर्षा की घटनाएं हो सकती हैं। जापानी आल्प्स के दक्षिण-पश्चिमी ढलानों पर सबसे अधिक वर्षा के साथ, जापान, कोरियाई प्रायद्वीप, ताइवान और उत्तरपूर्वी चीन सहित पूर्वी एशिया में पहाड़ों के दक्षिणी और पश्चिमी ढलानों पर वायुमंडलीय नदी से संबंधित वर्षा की मात्रा में भारी बढ़ोतरी हुई। प्रोफेसर कामे कहते हैं कि हमारे निष्कर्ष मध्य अक्षांश के अन्य क्षेत्रों पर भी लागू हो सकते हैं, जहां वायुमंडलीय नदियों और खड़े पहाड़ों के परस्पर प्रभाव पश्चिमी उत्तरी अमेरिका और यूरोप जैसे वर्षा में एक प्रमुख भूमिका निभाती है। इन क्षेत्रों में भी जलवायु के गर्म होने पर अधिक लगातार और भारी वर्षा की घटनाएं हो सकती हैं। यह अध्ययन जियोफिजिकल रिसर्च लेटर्स नामक पत्रिका में प्रकाशित हुआ है।

साभार - डाउन टू अर्थ

# स्कूलों के बंद होने के कारण अभी भी दुनिया भर में प्रभावित हैं 63.5 करोड़ बच्चे

**नई दिल्ली। कोविड-19 महामारी के चलते दुनिया भर में जिस तरह से पूर्ण या आंशिक रूप से स्कूल बंद करने पड़े हैं उससे दुनिया भर में करीब 63.5 करोड़ बच्चों की शिक्षा प्रभावित हुई है। यह जानकारी हाल यूनिसेफ द्वारा साझा नवीनतम आंकड़ों में सामने आई है। गौरतलब है कि पिछले करीब दो वर्षों से महामारी के कारण शिक्षा प्रभावित रही है।**

इन व्यवधानों से बच्चों में बुनियादी जोड़-घटा और पढ़ने-लिखने के कौशल पर असर पड़ा है। वैश्विक स्तर पर शिक्षा में आए व्यवधान का मतलब है कि लाखों बच्चे उस स्कूली शिक्षा से वंचित रह गए थे, जो उन्हें कक्षा में होने पर मिलती। इसका सबसे ज्यादा खामियाजा छोटे और कमजोर वर्ग से सम्बन्ध रखने वाले बच्चों को सबसे ज्यादा हुआ है। स्कूलों के बंद होने के कारण निम्न और मध्यम आय वाले देशों में सीखने का जो नुकसान हुआ है उसे देखें तो जहां महामारी से पहले इन देशों में 10 वर्ष की उम्र के 53 फीसदी बच्चे अपने पाठ को पढ़ने या समझने में असमर्थ थे वो प्रतिशत अब बढ़कर 70 पर पहुंच चुका है। यदि इथियोपिया से जुड़े आंकड़ों को देखें तो वहां प्राथमिक स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे व्यवधान के चलते सामान्य से केवल 30 से 40 फीसदी ही गणित सीख पाए थे। इसी तरह महामारी से पहले जहां ब्राजील के कई राज्यों में दूसरी कक्षा में पढ़ने वाले आधे बच्चे पढ़ने में असमर्थ थे वो आंकड़ा बढ़कर 75 फीसदी पर पहुंच गया था। वहीं ब्राजील में 10 से 15 वर्ष की उम्र के हर दसवें बच्चे की मंशा स्कूल खुलने के बाद वापस स्कूल जाने की नहीं थी। यदि दक्षिण अफ्रीका से जुड़े आंकड़ों को देखें तो मार्च 2020 से जुलाई 2021 के बीच करीब 4 से 5 लाख बच्चों ने कथित तौर पर स्कूल छोड़ दिया था। समय बीतने के साथ-साथ स्कूलों के बंद होने का असर भी बढ़ता जा रहा है। सीखने समझने के नुकसान के साथ-साथ स्कूलों के बंद होने का असर बच्चों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर भी असर पड़ रहा है। इसके कारण पोषण के नियमित स्रोत तक उनकी पहुंच कम हो गई है और उनके उत्पीड़न का खतरा भी बढ़ गया है। साक्ष्य बताते हैं कि कोविड-19 महामारी के चलते बच्चों और युवाओं में चिंता और अवसाद कहीं ज्यादा बढ़ गया है। पिछले अध्ययनों से पता चला है कि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले किशोरों और लड़कियों में अन्य की तुलना में यह समस्या कहीं ज्यादा होने की सम्भावना है। गौरतलब है कि दुनिया भर में स्कूलों के बंद होने के कारण करीब 37 करोड़ बच्चे रोज मिलने वाले भोजन से वंचित हो गए हैं। दुर्भाग्य की बात है कि कुछ बच्चों के लिए यह भोजन उनके दैनिक पोषण का एकमात्र विश्वसनीय स्रोत था। इस बारे में यूनिसेफ के शिक्षा प्रमुख रॉबर्ट जेनकिंस का कहना है कि इस साल मार्च में शिक्षा पर पड़ते कोविड-19 के प्रभाव को दो साल हो जाएंगे। यह स्कूली शिक्षा को होती ऐसी क्षति है जिसकी भरपाई आसान नहीं है। इसके लिए केवल स्कूलों को दोबारा चालू करना काफी नहीं है, इसके कारण सीखने के मार्ग में जो व्यवधान आए हैं उन्हें दूर करना जरुरी है। इस नुकसान को पूरा करने के लिए बच्चों को काफी मदद की जरुरत होगी। उनके अनुसार इस भरपाई के लिए स्कूलों को शिक्षा देने के साथ-साथ बच्चों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर भी ध्यान देना होगा। साथ ही उनके सामाजिक विकास और पोषण को भी ध्यान में रखना होगा।

साभार - डाउन टू अर्थ

# एक दशक में बाघों की संख्या दोगुनी करने वाले टाइगर रिजर्व को मिला सम्मान

**भारत के सत्यमंगलम टाइगर रिजर्व को वर्ष 2010 के बाद टाइगरों की संख्या को दोगुना करने पर प्रतिष्ठित टी 2 पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह रिजर्व नीलगिरि बायोस्फीयर लैंडस्केप का हिस्सा है। नीलगिरि बायोस्फीयर रिजर्व पर वर्तमान में दुनिया में टाइगरों की सबसे अधिक आबादी है। वर्ल्ड वाइल्डलाइफ फंड (डब्ल्यूडब्ल्यूएफ) इंडिया की एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार ये पुरस्कार कंजर्वेशन एश्योर्ड टाइगर स्टैंडर्ड्स, फ्यूना एंड फ्लोरा इंटरनेशनल, ग्लोबल टाइगर फोरम, आईयूसीएन का इंटीग्रेटेड टाइगर हैबिटेट कंजर्वेशन प्रोग्राम,पैंथेरा, यूएनडीपी, द लॉयन्स शेयर, वाइल्ड लाइफ कंजर्वेशन सोसाइटी और डब्ल्यूडब्ल्यूएफ (वर्ल्ड वाइड फंड फॉर नेचर) द्वारा वितरित किए जा रहे हैं। ये सभी संगठन 13 टाइगर रेंज देशों की 10वीं वर्षगांठ मना रहे हैं, जो 2022 तक बाघों की वैश्विक आबादी को दोगुना करने के लिए प्रसिद्ध हैं। यह पुरस्कार राज्य सरकारों और स्थानीय समुदायों की कोशिशों के लिए दिया जाता है जिन्होंने इस नए टाइगर रिजर्व को भारत में सबसे ज्यादा आबादी वाला स्थान बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।**

सत्यमंगलम को 2013 में टाइगर रिजर्व घोषित किया गया था और अब इस क्षेत्र में लगभग 80 बाघ हैं। नीलगिरि और ईस्टर्न घाट लैंडस्केप के बीच यह टाइगर रिजर्व महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मुदुमलाई टाइगर रिजर्व, बांदीपुर टाइगर रिजर्व और बीआर हिल्स टाइगर रिजर्व जैसे दूसरे जाने माने टाइगर हैबिटेट से अच्छी तरह जुड़ा है। इरोड फॉरेस्ट डिवीजन, कोयंबटूर फॉरेस्ट डिवीजन और मलाई महादेश्वर वाइल्ड लाइफ सेंचुरी जैसे आस पास के क्षेत्र भी महत्वपूर्ण टाइगर हैबिटेट के रूप में उभर रहे हैं। इससे टाइगर भोजन और नए क्षेत्र की तलाश में आसानी से एक से दूसरे स्थान पहुंच सकेंगे।डब्ल्यूडब्ल्यूएफ, इंडिया के सेक्रेटरी जनरल और सीईओ रवि सिंह ने कहा, "टीX2 पुरस्कार बाघों को बचाने के लिए सरकारों, एनजीओ और स्थानीय समुदायों के सराहनीय योगदान का सम्मान करता है। सम्मान के लिए हाल ही में चुने गए टाइगर रिजर्व जैसे सत्यमंगलम दूसरों को इस अद्भुत प्रजाति और उसके हैबिटेट को सुरक्षित करने के लिए प्रयास करने की प्रेरणा देता है।

इस साल सितंबर में, टाइगर रेंज के देश व्लादिवोस्तोक में दूसरे ग्लोबल टाइगर समिट में महत्वाकांक्षी टी2 लक्ष्य बाघों की संख्या दोगुनी करना का मूल्यांकन करने और अगले 12 सालों के लिए बाघों के संरक्षण के लिए प्राथमिकताओं को समझने के लिए जुटेंगे। सत्यमंगलम टाइगर रिजर्व के अलावा, नेपाल के बर्दिया नेशनल पार्क ने 2010 से अब तक बाघों की संख्या दोगुनी करने के लिए टीX2 पुरस्कार जीता है। टाइगरों के संरक्षण का दूसरा पुरस्कार टाइगर कंजर्वेशन एक्सीलेंस नेपाल में खाता फॉरेस्ट कंजर्वेशन एरिया को जाता है, जो नेपाल और भारत के बीच टाइगरों के सीमा पार आवागमन को सुरक्षित करता है। 202 किलोमीटर तक फैले 74 कम्युनिटी फॉरेस्ट के नेटवर्क को शामिल करता हुआ, खाता कॉरिडोर जहां समुदाय-आधारित संरक्षण प्रयासों ने नेपाल में बर्दिया नेशनल पार्क और भारत में कतर्नियाघाट वाइल्डलाइफ सेंचुरी के बीच बाघों के आवागमन को सुरक्षित करता है। पिछले पांच सालों में, 46 टाइगरों को दूसरी प्रतिष्ठित और खतरनाक स्तनधारी प्रजातियों को कॉरिडोर का इस्तेमाल करते हुए देखा गया है। इनमें एशियाई हाथी और एक सींग वाले गैंडे शामिल हैं। डब्ल्यूडब्ल्यूएफ के टाइगर्स अलाइव इनिशिएटिव के लीड स्टुअर्ट चैपमैन ने कहा, " 2010 में लिए गए संकल्पों से पता चलता है कि बाघ संरक्षण के लिए लंबे समय के संकल्पों से क्या हासिल किया जा सकता है। इन असाधारण परिणामों के पीछे फील्ड टीमों, संरक्षण भागीदारों और बाघों के साथ रहने वाले समुदायों का समर्पण है। इंटीग्रेटेड टाइगर हैबिटेट प्रोग्राम, आईयूसीएन के समन्वयक सुगोतो रॉय ने कहा, "बाघों के सफल संरक्षण में लगातार प्रबंधन और हैबिटेट के लैंडस्केप स्केल में सुधार, बाघों और उनके शिकार की कठोर निगरानी और स्थानीय समुदायों के साथ बड़े पैमाने पर काम करना शामिल है। इन सभी मानदंडों को उत्कृष्टता के साथ पूरा किया गया है, जिससे हमें विश्व स्तर पर महत्वपूर्ण परिणाम मिले हैं। टी लक्ष्य किसी एक प्रजाति के लिए अब तक का निर्धारित सबसे महत्वाकांक्षी संरक्षण लक्ष्यों में से एक है, और व्लादिवोस्तोक में दूसरा ग्लोबल टाइगर समिट, सितंबर 2022, उनके भविष्य को सुरक्षित करने के लिए एक नई दृष्टि स्थापित करने का अवसर देता है। बाघों की संख्या शायद एक सदी पहले 100,000 थी, लेकिन 2010 में तेजी से गिरकर 3,200 हो गई। टाइगर रेंज देशों के अनुमानों के आधार पर 2016 में उनकी संख्या धीरे धीरे बढ़कर 3,900 हुई।

# गणतन्त्र दिवस भारत का एक राष्ट्रीय पर्व

*गणतन्त्र दिवस (गणतंत्र दिवस) भारत का एक राष्ट्रीय पर्व है जो प्रति वर्ष 26 जनवरी को मनाया जाता है। इसी दिन सन् 1950 को भारत सरकार अधिनियम (1935) को हटाकर भारत का संविधान लागू किया गया था। एक स्वतन्त्र गणराज्य बनने और देश में कानून का राज स्थापित करने के लिए संविधान को 26 नवम्बर 1949 को भारतीय संविधान सभा द्वारा अपनाया गया और 26 जनवरी 1950 को इसे एक लोकतान्त्रिक सरकार प्रणाली के साथ लागू किया गया था। 26 जनवरी को इसलिए चुना गया था क्योंकि 1930 में इसी दिन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई० एन० सी०) ने भारत को पूर्ण स्वराज घोषित किया था। यह भारत के तीन राष्ट्रीय अवकाशों में से एक है, अन्य दो स्वतन्त्रता दिवस और गांधी जयंती हैं। इस दिन हर भारतीय अपने देश के लिए प्राण देने वाले प्रत्येक व्यक्ति को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं, गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रीय पति राष्ट्रीय का नाम का संदेश देते हैं स्कूलों, कॉलेजों आदि मे कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते है 26 जनवरी को हमारे देश की राजधानी मे बहुत सारे आकर्षक करने वाले और मन मोह लेने वाले कार्य क्रम किए जाते है देश की राजधानी दिल्ली को किसी दुल्हन की तरह सजाया जाता है दिल्ली मे बड़ी धूम धाम से परेड निकाली जाती है देश के कोने कोने से लोग दिल्ली मे 26 जनवरी की परेड देखने दिल्ली आते है दिल्ली मे बड़ी ही धूम धाम से अस्त्र शस्त्र का प्रदर्शन होता है 26 जनवरी के दिन राष्ट्रपति की सवारी बड़ी ही धूम धाम से निकाली जाती है और भी बहुत से मन मोहक कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है देश के हर कोने मे जगह जगह 26 जनवरी को मनाया जाता है कई तरह के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं नृत्य नाटक आदि। 26 जनवरी का यह त्योहार केवल भारत द्वारा ही नहीं मनाया जाता बल्कि दुनिया भर मे निवास कर रहे प्रत्येक भारत वासी द्वारा मनाया जाता है गणतंत्र दिवस मनाने का मुख्य उद्देश्य यह है कि 26 जनवरी 1950 को पूरे 2 साल 11 महीने और 18 दिन लगा कर बनाया गया संविधान लागू किया गया था और हमारे देश भारत को पूर्ण गणतंत्र घोषित किया गया। वैसे तो हमारा देश 15 अगस्त 1947 को अंग्रेज़ों के चंगुल से आज़ाद हो गया था परंतु इस आज़ादी को रूप 26 जनवरी को दिया गया। तब से अब तक हम इस दिवस को आज़ादी के दिन के रूप मे मनाते है आज हमे आज़ादी मिले हुए पूरे 73 साल हो चुके है हमारे देश की आज़ादी किसी भी एक व्यक्ति के कारण नहीं हुई हमारे देश की आज़ादी बहुत सारे भगत सिंह, महात्मा गांधी आदि जैसे महान पुरुषों के बलिदान का परिणाम है। देश भक्त अपने देश को गुलामी की जंजीरों से बंधा ना देख सके अपने देश को आज़ाद कराने के लिए उन्होंने अपने प्राण तक त्याग दिये उनके बलिदानों के कारण अंग्रेज़ों को अपने घुटने टेकने पड़े और उन्होंने भारत को आज़ाद कर दिया। गणतंत्र दिवस के दिन हम इन महान पुरुषों के बलिदान को याद करते और प्रेरणा लेते है कि हम भी इन्हीं महान पुरुषों की तरह अपने देश के लिए अपने प्राण त्याग देंगे उसकी आन मान और शान की रक्षा के लिए हर समय तय्यार रहेंगे और दोबारा कभी अपने देश को गुलामी की जंजीरों में बंधने नहीं देंगे हम सब को इन देश भक्तो से प्रेरणा लेनी चाहिए और देश की हिफाज़त के लिए तय्यार रहना चाहिए।` है गणतंत्र दिवस को मनाने का एक उद्देश्यकि हम महान पुरुषों के बलिदान को याद करके उनसे प्रेरणा लेते है। प्रत्येक भारत वासियों को भारत के शहीदों से प्रेरणा लेनी चाहिए और अपने देश को ऊँचाइयों तक पहुंचाने के लिए प्रयास करते रहना चाहिए और हर भारतीय का कर्तव्य बनता है कि वह देश के विकास के लिए अपना पूरा योगदान दें और देश की रक्षा के लिए हर समय खड़ा रहे। सन् 1929 के दिसंबर में लाहौर में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन पंडित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में हुआ जिसमें प्रस्ताव पारित कर इस बात की घोषणा की गई कि यदि अंग्रेज सरकार 26 जनवरी 1930 तक भारत को स्वायत्तयोपनिवेश (डोमीनियन) का पद नहीं प्रदान करेगी, जिसके तहत भारत ब्रिटिश साम्राज्य में ही स्वशासित एकाई बन जाता उस दिन भारत को पूर्ण स्वतंत्रता के निश्चय की घोषणा की और अपना सक्रिय आंदोलन आरंभ किया। उस दिन से 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त होने तक 26 जनवरी स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता रहा। इसके पश्चात स्वतंत्रता प्राप्ति के वास्तविक दिन 15 अगस्त को भारत के स्वतंत्रता दिवस के रूप में स्वीकार किया गया। भारत के स्वतंत्र हो जाने के बाद संविधान सभा की घोषणा हुई और इसने अपना कार्य 9 दिसम्बर 1947 से आरंभ कर दिया। संविधान सभा के सदस्य भारत के राज्यों की सभाओं के निर्वाचित सदस्यों के द्वारा चुने गए थे।*

- साभार

# जलवायु परिवर्तन- भारत, नेपाल और बांग्लादेश में घरेलू कामगार महिलाओं के लिए बना अभिशाप

**नई दिल्ली। जलवायु परिवर्तन आज वक्त की एक ऐसी सच्चाई है जिसे इंकार नहीं किया जा सकता। देखा जाए तो यह बदलाव दुनिया भर में यह उस वर्ग को सबसे ज्यादा दुःख दे रहा है, जो इसके लिए सबसे कम जिम्मेवार है। ऐसा ही कुछ दक्षिण एशिया में रहने वाली घरेलू कामगार महिलाओं के साथ भी हो रहा है। शहरों की चकाचौंध के बीच मैली-कुचैली गलियां, जिन्हें हम स्लम कहते है, में रहकर यह महिलाएं सिलाई, कढ़ाई या फिर खाने की रेहड़ी लगाने जैसे छोटे मोटे काम करके अपना और अपने परिवार का पेट पालती है।**

इनमें से बहुतों को तो यह भी नहीं पता होगा कि वो जिन परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं उसके लिए जलवायु में आता बदलाव जिम्मेवार है। वो तो बस इतना जानते हैं कि इस बार गर्मी कुछ ज्यादा बढ़ गई है जिस वजह से उनकी टिन की छत ज्यादा ही गर्म हो गई है या फिर भारी बारिश के चलते उनके घरों में पानी भर गया है, जिसका असर उनकी जीविका और आय पर पड़ रहा है। इसी को समझने के लिए होमनेट साउथ एशिया ने इन घरेलू महिला कामगारों पर पड़ते जलवायु परिवर्तन के असर का अध्ययन किया है, जिसके निष्कर्ष एक रिपोर्ट इम्पैक्ट ऑफ क्लाइमेट चेंज ऑन अर्बन होम-बेस्ड वर्कर्स इन साउथ एशिया% के रूप में प्रस्तुत किए है। गौरतलब है कि होमनेट साउथ एशिया घरेलू कामगारों का प्रतिनिधित्व करने वाले समूहों का एक क्षेत्रीय नेटवर्क है।अपने इस अध्ययन में शोधकर्ताओं ने बांग्लादेश के ढाका, भारत में अहमदाबाद एवं सूरत और नेपाल के भक्तपुर और ललितपुर का अध्ययन किया है जहां उन्होंने 202 महिलाओं से इस बारे में जानकारी हासिल की थी। इनमें से 61 फीसदी महिलाएं 30 से 50 वर्ष की थी। साथ ही करीब 83 फीसदी विवाहित थी, जबकि 63 फीसदी के बच्चे 14 वर्ष से छोटे थे। रिपोर्ट के मुताबिक दक्षिण एशिया में महिलाओं के रोजगार में घरेलू महिला कामगारों की हिस्सेदारी करीब एक चौथाई है जबकि पुरुषों का केवल 6 फीसदी हिस्सा ही घरेलू कामगारों के रूप में काम करता है। इससे जुड़े लोग बहुत कमजोर तबके से सम्बन्ध रखते हैं। देखा जाए तो इन घरेलू कामगारों की आय अन्य की तुलना में बहुत कम होती है। सर्वे में शामिल 43 फीसदी महिला कामगारों ने आय में आई गिरावट और 41 फीसदी ने उत्पादकता में आती कमी के लिए मुख्य रूप से जलवायु परिवर्तन को जिम्मेवार माना था। 83 फीसदी का कहना है कि पिछले 10 वर्षों में गर्मी के दौरान तापमान बढ़ रहा है। हालांकि उनमें से दो-तिहाई करीब 66.3 फीसदी को नहीं पता कि ऐसा क्यों हो रहा है, जबकि 11 फीसदी ने इसके लिए भगवान के कोप को वजह माना है। इतना ही नहीं इनमें से 55 फीसदी ने यह स्वीकार किया कि बदलती जलवायु उनके परिवार को प्रभावित कर रही है। इसका जो सबसे ज्यादा असर सामने आया है वो यह है कि इसके चलते महिलाओं के पहले के मुकाबले अपने घरेलू रोजमर्रा के कामों पर ज्यादा वक्त देना पड़ रहा है, जिसके लिए उन्हें कोई वेतन नहीं मिलता। सर्वे में शामिल करीब 60 फीसदी महिलाओं का कहना है कि उन्हें रोजाना दो घंटे और काम करना पड़ रहा है। उनके अनुसार उन्हें बीमार की देखभाल, पानी भरना और खाने के सामान के रखरखाव पर ज्यादा वक्त देना पड़ रहा है। यदि स्वास्थ्य की बात करें तो करीब 15 फीसदी का कहना है कि उनके परिवार के किसी न किसी सदस्य को पिछले कुछ वर्षों में हीटस्ट्रोक का सामना करना पड़ा था। वहीं 33 फीसदी ने गंदे पानी के कारण होने वाली बीमारियों और 34 फीसदी ने वेक्टर जनित रोगों की शिकायत की थी। 30 फीसदी घरेलू महिला कामगारों का कहना है कि मानसून के दौरान उनके घरों में बारिश का पानी भर गया था, जबकि उनमें से 47 फीसदी ने घरों के नुकसान की जानकारी दी है। इनमें से 48 फीसदी को जलवायु परिवर्तन की मार से बचने के लिए अतिरिक्त उपाय करने पड़े थे। करीब 20



फीसदी को अपना घर बदलना पड़ा था, जबकि 16 फीसदी ने अपनी जीविका में बदलाव किए थे। इनमें से 57 फीसदी का कहना है कि उन्हें अपना घर चलाने के लिए पार्ट टाइम में काम भी करना पड़ा था क्योंकि उनकी मासिक आय 5,000 से भी कम है। वहीं सर्वे में शामिल 65 फीसदी का कहना है कि उनके पास सेविंग अकाउंट हैं, जबकि 24 फीसदी ने स्वास्थ्य बीमा की बात को स्वीकार किया है। ऐसे में जलवायु परिवर्तन यदि उनके स्वास्थ्य पर असर डालता है तो उससे निपटने के लिए उनके पास बहुत कम साधन हैं इन बदलावों से कैसे निपटा जाए इस बारे में लोगों को बहुत कम जानकारी है। गर्मियों में तापमान बढ़ने पर कैसे बचा जाए इस बारे में पूछे जाने पर 55 फीसदी ही यह बता पाए थे कि उन्हें क्या करना चाहिए। 51 फीसदी का कहना है कि उन्हें इस बारे में विशेष जानकारी नहीं है इसलिए वो जलवायु परिवर्तन से बचने के लिए जरूरी कदम नहीं उठा पाते। इसके बाद 18 फीसदी ने इसके लिए उपयुक्तता की कमी, 17 फीसदी ने उच्च कीमत और 14 फीसदी ने मदद की कमी को वजह माना था। कुल मिलाकर यह कह सकते हैं कि घरेलू कामगार विशेष रूप से महिलाएं जलवायु परिवर्तन की मार से बुरी तरह से प्रभावित हैं। जो उनके लिए एक बुरे सपने जैसा है। गरीबी, सामाजिक सुरक्षा से दूरी, जानकारी की कमी उन्हें इसके प्रति और संवेदनशील बना देती हैं, जो उनकी अनुकूलन क्षमता को भी कम कर देता है। इससे बचने के लिए अधिकांश को अपने घरों और रोजगार को छोड़ना पड़ता है। ऐसे में यह जरुरी है कि इन घरेलू महिला कामगारों की अनुकूलन क्षमता के निर्माण पर ध्यान देने के लिए विशेष ध्यान दिया जाए। इन बदलावों से कैसे बच सकते हैं इसके लिए उन्हें जागरूक करना भी जरुरी है। हम जानते हैं कि समय के साथ इस क्षेत्र में तापमान और बढ़ता जाएगा, साथ ही भारी बारिश वाले दिनों में भी इजाफा होने की पूरी सम्भावना है। ऐसे में यह जरुरी है कि इन्हें इसके लिए तैयार किया जाए। रिपोर्ट में भी इनके बचाव के लिए गर्मी रोधी निर्माण सामग्री और ऊर्जा दक्ष घरेलू उपकरणों के उपयोग के साथ ही पीने के साफ पानी तक पहुंच में सुधार की सिफारिश की गई है।

साथ ही उनके घरों को अपग्रेड करने के लिए उन्हें सामाजिक सुरक्षा और वित्तीय सहायता प्रदान करने की पेशकश को प्रस्तावित किया है, जिससे यह भी अपने और अपने बच्चों के लिए एक बेहतर भविष्य के सपने को साकार कर पाएं।

लेखक - डाउन टू अर्थ

## मालवा-निमाड़ के सभी जिलों में उल्लासपूर्वक मनाया गया गणतंत्र दिवस समारोह

**इंदौर।** मालवा-निमाड़ के इंदौर, उज्जैन, रतलाम, देवास, बुरहानपुर, बड़वानी, धार, झाबुआ, खंडवा, खरगोन, मंदसौर, नीमच, शाजापुर, आगर मालवा और अलीराजपुर जिलों में गणतंत्र दिवस समारोह उल्लासपूर्वक मनाया गया। खंडवा में गणतंत्र दिवस पर विभागीय योजनों की झांकी निकाली गई। मंदसौर में गणतंत्र दिवस की 73 वी वर्षगांठ पर राजीव गांधी क्रीड़ा परिसर में मुख्य समारोह हुआ। सुबह 9 बजे शुरू हुए समारोह में प्रभारी मंत्री राजवर्धनसिंह दत्तीगांव ने ध्वजारोहण किया। इसके बाद परेड का निरीक्षण कर सलामी ली। इस बार मुख्य समारोह से स्कूली बच्चों को दूर रखा गया है। गणतंत्र दिवस को शाम 6:30 बजे जिले के प्रत्येक नगर, ग्राम, विद्यालय, महाविद्यालय, निजी संस्था (हॉस्पिटल, बैंक, सोसाइटी), निजी कार्यालय, औद्योगिक इकाई एवं शहर में स्थापित महापुरुषों की प्रतिमाओं के समक्ष भारत माता पूजन और आरती का आयोजन किया जाएगा। साथ ही प्रत्येक मोहल्ले व ग्राम स्तर पर भी कोविड नियम पालन करते हुए भारतमाता पूजन व आरती की जाएगी। प्रभारी मंत्री दत्तीगांव अभी सुबह 11 बजे जैविक विविधता उद्यान का अवलोकन एवं पौधारोपण करेंगे। 11:45 बजे कलेक्टर कार्यालय में सांची दुग्ध पार्लर का शुभारम्भ करेंगे। दोपहर 12:25 बजे ग्राम एलची में एक जिला-एक उत्पाद के स्वसहायता समूह से चर्चा एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का अवलोकन करेंगे। शाम 6 बजे कुशाभाऊ ठाकरे ऑडिटोरियम में भारत पर्व कार्यक्रम में सम्मिलित होंगे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008